(पुस्तक संक्षिप्त परिचय)

राम का समय त्रेता में आज से लगभग 7133 वर्ष पूर्व तथा कृष्ण द्वापर में आज से लगभग 5133 वर्ष पूर्व पैदा हुए थे। परीक्षित के पश्चात कलियुग का प्रारंभ हुआ। अब सतयुग का समय आ गया है।

इस वर्तमान समय में ब्रह्मा जी के दिन रूपी कल्प के 14 मन्वंतरों में से वैवस्वत मन्वंतर (वर्तमान मन्वंतर) चल रहा है।

एक मन्वंतर में 71 चतुर्युग (सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग) होते हैं। अतः लगभग 1000 चतुर्युग (71X14 = 994) के बराबर दिन और इतनी ही रात्रि ब्रह्मा जी के एक दिन (कल्प) के बराबर होते हैं।

1. वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तृतीया को सतयुग का प्रारंभ होता है।

2. कार्तिक मास के शुक्लपक्ष के नवमी को त्रेता

3. भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को द्वापर

4. माघ मास की पूर्णिमा को कलियुग का प्रारंभ होता है

उपरोक्त चारों युगादि तिथियाँ कही जाती हैं।

एक मन्वंतर में 71 चतुर्युग (सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग) होते हैं। वर्तमान वैवस्वत मन्वंतर के 71 चतुर्युग में से 27 चतुर्युग बीत चुके हैं और 28 वें चतुर्युग का कलियुग चल रहा है।

28 वें चतुर्युग में भी यह कलियुग है जिसके कुल वर्षों की संख्या 5070.4225 था 5071 वर्ष है जिसमें से आज 2023 के अनुसार 5025 वर्ष समाप्त हो चुके हैं।

अतः आज से 5071 - 5025 = 46 वर्षों बाद अर्थात वर्ष 2069 की वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तृतीया से 29 वें चतुर्युग के सतयुग का आरंभ होगा। वर्तमान में कलयुग की विकृतियाँ चरम स्थिति में है। अति शीघ्र असत्य की समाप्ति तथा सतयुग की स्थापना होगी।

इतिहास साक्षी है, प्रकृति स्वयमेव परिवर्तन करती है।

तमाम औद्योगिकरण के विकृतियों के परिणाम स्वरूप 1920 में लीग ऑफ नेशन तथा 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना और वर्तमान में तमाम विकृतियों की समाप्ति के लिए जनतांत्रिक लोककल्याणकारी विश्व सरकार का गठन आध्यात्मिक समाजवाद के द्वारा ही संभव है।

प्रोफे. जय नारायण पांडेय

"आध्यात्मिक समाजवाद व सतयुग की वापसी (जनतंत्र व विश्व सरकार)"

पुस्तक के लेखक प्रोफे. जय नारायण पांडेय का जन्म 15.07.1963 को अयोध्या उत्तर प्रदेश के निकटस्थ ग्राम पितखावा के प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार श्री गजाधर पांडेय के सातवीं पीढ़ी में हुआ। आपके पिता श्री वासुदेव पांडेय मध्य प्रदेश (वर्तमान छत्तीसगढ़) राजनांदगांव में 1961 से आकर बस गए।

प्रोफेसर पांडेय ने प्राथमिक से लेकर इंटर तक की शिक्षा अपने पैतृक ग्राम में रहकर पूरी की तत्पश्चात उन्होंने उच्च शिक्षा मध्य प्रदेश के राजनांदगांव व रायपुर से प्राप्त की, जो वर्तमान में छत्तीसगढ़ में है।

आप 1985 में अर्थशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर परीक्षा में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर से प्रथम श्रेणी में प्रावीण्यता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आपने 1987 से मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ के विभिन्न शासकीय महाविद्यालयों में कार्य किया। आप उच्च शिक्षा संचालनालय रायपुर में भी कार्यरत रहे।

आप राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी भी रहे। आप मध्यप्रदेश शासन व छत्तीसगढ़ शासन के विभिन्न परामर्शदात्री समितियों के सदस्य भी रहे। आप विभिन्न विश्वविद्यालयों व स्वशासी महाविद्यालय के पाठ्यक्रम समितियों के सदस्य/अध्यक्ष भी रहे।

वर्तमान में प्रोफे. पांडेय, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अंबिकापुर जिला सरगुजा छत्तीसगढ़ में विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र एवं महाविद्यालय के स्वशासी अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम समिति के अध्यक्ष के साथ संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय सरगुजा के अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम समिति के अध्यक्ष भी हैं। आप छत्तीसगढ राज्य के केन्द्रीय पाठ्यक्रम समिति के सदस्य भी है। आप हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, छत्तीसगढ़ी, अवधी के ज्ञाता भी हैं।

प्रो. पांडेय मध्य प्रदेश शिक्षक संघ के महाविद्यालय प्रकोष्ट के प्रांतीय संयोजक तथा छत्तीसगढ़ शिक्षक संघ के प्रांतीय उपाध्यक्ष का दायित्व भी निर्वहन किया।

प्रोफे. जय नारायण पांडेय ने अर्थशास्त्र विषय के साथ, समस्त विषयों व साहित्य का अध्ययन कर वर्तमान पुस्तक के अलावा "आध्यात्मिक समाजवाद", "आध्यात्मिक समाजवाद और विश्व सरकार" आदि पुस्तकों की रचना की है।

एकैडमिक पब्लिकेशन
www.academicpublication.in

ISBN-978-81-19680-28-3

आध्यात्मिक समाजवाद व सतयुग की वापसी : प्रो. जय नारायण पाण्डेय

आध्यात्मिक समाजवाद व सतयुग की वापसी

(जनतंत्र व विश्व सरकार)

प्रो. जय नारायण पाण्डेय

आध्यात्मिक समाजवाद व सतयुग की वापसी

(जनतंत्र व विश्व सरकार)

आध्यात्मिक समाजवाद व सतयुग की वापसी

(जनतंत्र व विश्व सरकार)

प्रो. जय नारायण पाण्डेय

एकैडमिक
एकैडमिक पब्लिकेशन
दिल्ली

एकैडमिक पब्लिकेशन

बी-578, गली न.8, नियर शांति पैलेश
पहला पुस्ता, सोनिया विहार
दिल्ली-110090
दूरभाष : 9811966475, 9811966603
ई-मेल #Academicpublicationsdelhi@gmail.com
academic2014@gmail.com
www.academicpublication.in

शाखा कार्यालय
सी-21,निशांत एनक्लेव पावी लोनी गाजियाबाद
गाजियाबाद-201102 (उ.प्र.)

© लेखक
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-81-19680-28-3
मूल्य : 2499.00 रुपये ($ 60)

टाइप सैटिंग
अरुण ग्राफिक्स दिल्ली

अनुक्रम

	शुभकामना संदेश 7	
	Message for the book of Dr. J N Pandey (Second Edition)	9
	From writer's desk [Second Edition].....	13
	Foreword (First Edition)	15
	संदेश (प्रथम संस्करण)	17
	शुभकामना संदेश (प्रथम संस्करण)	19
	From Writer's Desk (First Edition)	21
	From Writer's Desk	25
अध्याय 1	**प्रस्तावना**	25
अध्याय 2	**आध्यात्मिक समाजवाद के सिद्धांत**	31
	I. आध्यात्मिक समाजवाद का मूल सिद्धांत	31
	II. सृष्टि धर्म	58
	III. गरीबी निवारण का आध्यात्मिक चेतना सिंद्धांत	68
	IV. विकास का लक्ष्य प्राप्ति सिद्धांत	68
	V. बाजार व बैंकिग तथा करारोपण का सिद्धांत	69
	VI. प्रशासनिक सुधार का सिद्धांत	77

VII. परिवहन व्यवस्था 78
VIII. व्यवस्थापिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका का सिद्धांत 79
IX. आनुपातिक लोकतांत्रिक निर्वाचन प्रणाली 82
X. उत्पादन के सिद्धांत 84
अध्याय 3 प्रदूषण व निवारण 99
अध्याय 4 विश्व सरकार 105
अध्याय 5 विश्व सरकार के स्थापना की अंतर्राष्ट्रीय यात्रा 119
अध्याय 6 आध्यात्मिक समाजवाद व सतयुग की वापसी 187
अध्याय 7 राजनैतिक व आध्यात्मिक विकास हेतु संविधान में आवश्यक संसोधन 225

(डॉ. आर. एन. सिंह)
रक्षा सचिव पदक एवं प्रशंसा

पूर्व प्राचार्य शा. वि.या.ता. स्नातकोत्तर
स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

डायरेक्टर
(अकादमिक व प्रशासन)
भारती विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) भारत

शुभकामना संदेश

प्रो. ज्यनारायण पाण्डेय द्वारा रचित पुस्तक **'आध्यात्मिक समाजवाद व सतयुग की वापसी (जनतंत्र व विश्व सरकार)'** आज के राजनीतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य मे बहुत ही जन उपयोगी रचना है। प्रो. पाण्डेय ने इस देश की वैदिक विचारधारा एवं पुरातन संस्कृति को आधार मानकर इस पुस्तक मे अपने व्यावहारिक चिंतन को साकार स्वरूप देने का प्रयास किया हैं। हमारा देश आध्यात्म के बल पर विश्वगुरू बनने का वास्तविक स्वरूप प्राचीन काल में प्राप्त कर लिया था। वैदिक दर्शन की रचनाएँ, कौटिल्य का अर्थशास्त्र आदि कहीं न कहीं इसी तरह के आध्यात्मिक, समाजवाद का तस्वीर प्रगट करते है। जहाँ व्यक्ति को पूर्णतः आर्थिक,सामाजिक, राजनीतिक स्वतंत्रता थी, वही व्यक्ति एक—दूसरे से समान व्यवहार करता था, कहीं कोई वर्गवाद की समस्या नहीं थी।

आज का युग भौतिकता की अंधी दौड़ का युग है। जहाँ चारों ओर गलाकाट प्रतियोगिता विद्यमान है। इस व्यवस्था ने मानव जीवन के मूल्यों को समाप्त कर मनुष्य को साध्य के स्थान पर साधन बना दिया है। पर्यावरणीय विनाश, ने मानव जीवन के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। ऐसी परिस्थिति में डॉ जयनारायण पाण्डेय जैसे चिंतकों ने पूरी दुनिया को कैसे बचाया जाएँ, इस पर अपनी रचना के माध्यम से लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है।

डॉ. पाण्डेय की प्रस्तुत रचना में, मनुष्य की प्रधानता है। उन्होने मानवीय मूल्यों को श्रेष्ठ स्थान देकर मानव को तथा उसके कल्याण को साध्य माना है तथा उसके सुखमय जीवन की संकल्पना की है। मनुष्य को साधन मानते हुए उन्होनें मनुष्य के शोषण से मुक्ति का मार्ग प्रस्तुत किया है।

डॉ पाण्डेय ने जहाँ अपनी रचना में अध्यात्मिक समाजवाद एवं विश्व सरकार के उद्देश्यों को बताया है। वहीं, दूसरी ओर उन्होने उन लक्ष्यों की प्राप्ति कैसे होगी? इसका मार्ग भी प्रस्तुत किया है। उन्होनें मॉडल प्रस्तुत करते हुए आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में संतुलन कायम करने का सार्थक एवं कारगर प्रयास किया है। उन्होने अपने चिंतन में गॉव को केन्द्र बिन्दु मानकर अपने पूरे माडल को प्रस्तुत किया है। जहॉं प्रत्येक गॉव सम्पन्न एवं सम्प्रभु होगा, गॉव की पूरी जरूरते गॉव में ही पूरी हो सकेगी, सरकारे आर्थिक कार्यो से मुक्त होकर उनका कार्य सुरक्षा एवं जनतंत्र को मजबूत करने का होगा। अनावश्यक हस्तक्षेप से मुक्ति मिल सकेगी। **जिससे सही मायने में रामराज्य की संकल्पना साकार हो सकेगी।**

डॉ. पाण्डेय की उक्त रचना एवं विचार आज के युग के लिए सार्थक पहल है। **मैं उन्हें व्यक्तिशः बधाई और शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ क्योकि उन्होंने लीक से हटकर एक आदर्श राज्य की संकल्पना का विचार ही नहीं दिया वरन उसकी प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त किया है।**

पुनः बधाई एवं साधुवाद शुभेक्षु

(डॉ. आर. एन. सिंह)
रक्षा सचिव पदक एव प्रशंसा
पूर्व प्राचार्य शा. वि.या.ता. स्नातकोत्तर
स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)
डायरेक्टर, अकादमिक व प्रशासन
भारती विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

Prof. Mohd Muzammil

EX Vice Chancellor,

Dr. B.R. Amdedkar University,

Agra(Formerly, Agra University Agra)

Vice Chancellor, MJP Rohilkhand University,

BareillyProf. of Economics, Lucknow University,

LucknowVisiting Fellow, SAVSP, QEH,

University of Oxford, UKLucknow, UP, INDIA

(prof.muzammil@gmail.com)

Message for the book of Dr. J N Pandey (Second Edition)

Dr Jai Narayan Pandey, Head of the Department of Economics, Rajiv Gandhi Post graduate College, Ambikapur, District Sarguja in Chhattisgarh State is an earnest scholar of economics and social sciences and believes in eternal values of life that shape the human character and development of the society. His another book# Spiritual Socialism and World Government is ready for publication and we feel happy to congratulate him and convey our best wishes to him by way of a Foreword/ Message to his book.

This book is duly arranged in the form of a valuable manuscript for publication which comprises of contents on economic development, bio-diversity, growth related problems, contemporary crisis, fresh prospects and opportunities. Surely, all these innovative themes are of great topical significance which converts the manuscript into a valuable document. He has successfully organized several Webinars in his above mentioned college and endeavored to prevail upon established authors and economists along with budding and enthusiast young faculty in economics and sister disciplines in university departments and colleges and stand-alone institutions to participate and contribute in his academic endeavor.

I had the pleasure to attend all the Webinars and I am a witness that so many scholars have ably contributed their well thought out articles, research notes, explanatory communication and resume of ongoing projects etc. though their

presentations. He has continuously kept in touch with authors and saw to it that the final versions from the authors are received in time for the academic events that he arranged in his college. This is really commendable on his part as researchers and authors often take longer time and slip the deadlines of the event and go unrecorded.

I profusely congratulate Dr. Pandey for this great effort and successful intellectual pursuit. It is heartening to note that this manuscript Spiritual Socialism and World Government is to be published in a book form shortly. I also take this opportunity and feel privileged to extend my warmest greetings to all those who have helped shape this document so well. There would be no exaggeration in saying that the spiritually elevated personality of Dr. Pandeyalways helped him in roping in such a wonderful galaxy of scholars that he has been able to set an institution of his own as an NGO which is working for the uplift of downtrodden of the society.

Owing to his courteous influence, all the contributing participants have maintained their understanding of the overall theme of the online programs and participated very actively. In the postpandemic world, very few titles have been published on related theme and therefore this book of Dr. J N Pandeywhich connects Spiritual Socialism with democratic development assumes great importance and huge academic value. The concept of development in view of the prevailing covid-19 crisis has undergone a sea change over the last two years or so. The proposed book as a matter of fact seems to be analyzing several themes (which deserve a book in their own right) so succinctly that at every stage the spiritual dimension is brought out to be the undercurrent of all economic arguments.

The philosophy of development of Dr. J N Pandeyand the theoretical underpinning of the booktake us to the British classical economists, to whom economic development was limited by division of labour and extent of market. Globalization is the modern phrase for the system that was visualized by them based on free trade of that period in history. Any barrier limiting free trade limits the division of labour and the market. They stood for free trade system and free markets and now globalization has started asking for the same again. Excessive focus on development led to speedy exploitation of natural resources that put immense pressure on bio diversity and the resulting loss in flora and fauna.

Development came to be analyzed in terms of sustainable growth and welfare concerns for future as well. Apparently, human welfare is not maximized in monopolistic conditions but in free market situation. Gradually new technology gave altogether new dimension to the institution of market which connects the people, households, firms and the governments. Growth oriented economic systems led to jobless growth, rootless growth, ruthless growth, voiceless growth and even futureless growth. The concern of Dr.Pandey is to have a world government based on democratic principles of development.

The sudden outbreak of pandemic in 2020 affected the global economy very substantially and differently. The whole world came to a standstill. Economies

crashed. GDP fell down and unemployment sharply deepened. The pandemic is global and countries tried their best to control it. However, some countries could not manage it well even with abundant resources like the USA while others could achieve exemplary success by emulative public commitment in controlling Covid-19 remarkably like New Zealand. In view of the human sufferings caused by displaced labour force and consequent economic distress, job creation afresh and reducing income inequalities will need to be given priority in development policies by national governments and also at the international level policy making.

On the other hand, in order to achieve a socialistic pattern of development with good governance we also need an approach of development which should promote production and trade not only in money terms but also on more ethical and sustainable basis to help improve living standards and overall human welfare. New ways will have to be found out through well thought out researches as how to ensure it. We know when markets fail markets cannot correct the failure. Government will have to intervene and provide packages of workable solutions. The proposed book seems to be an attempt in that direction.

The literacy dimension of the author of this book is noteworthy and his knowledge of different regional languages and cultures of the languages has certainly given the local feel in his global vision of development. The reason is that languages carry the culture of the local area and the ethos of development is hidden in the local expressions in vernacular- be it Awadhi, Bhojpuri or Chhattisgarhi language and related literature. Viewed thus, the knowledge of local languages of Dr. JN Pandey has given another noteworthy slant to his vision of development in which local concerns are wedded with global challenges of development with the underpinning of spiritual socialism. In this sense,this book is going to be a unique document in its own right. I offer my best wishes to the author of this book - Dr Jai NarainPandey.

(Prof MohdMuzammil)

Dr. Jai Narain Pandey
Head, Post Graduate
Department of Economics & Chairman BOS Economics
R.G. GOVT. P.G. College Ambikapur Surguja, (C.G.), 497001, India

From writer's desk [Second Edition].....

By establishing a Democratic World Government through Spiritual Socialism, the SatyugèSatvik Karma means preserving biodiversity, with timely fulfillment of education, knowledge, innovation, employment, marriage and social, spiritual, economic responsibilities, operated by the Rajarshi and controlled by the brahmarshis; the need for Public Democratic Government has come.

Various principles have been createdèexplained in the present book to achieve the above objectives and goals. SpiritualityèDharma is the integrated philosophy of the duties of the Supreme Soul and the soul. There itself; materialismèthe physical body of the soul; should be public welfare while discharging holy matrimonial and social relationships with full meaning.

For the completeness of the present book, I would like to thank the most Respected Professor Muzammil [Professor Economics and former Vice Chancellor], respected elder brother Dr. S. K Tripathi [Former Additional DirectorèPrincipal Higher Education Government of Chhattisgarh] , My son Captain Dr. Girish Pandey, Daughter Dr. Pooja Pandey, Vidushi Ardhangini Mrs. Neelam Pandey, younger sister Late. Smt. Dr. Ekta Upadhyay, Mother Late. Smt. Vidyavati Pandey, and my father Shri Vasudev Pandey.

In the entirety of this original work, the inspiration of the Supreme Father Supreme Soul and Mother Bhagwati has definitely been there. I am grateful that he has selected me for this responsibility.

Acknowledgment of Academic Publication Delhi for its publication support.

Finally thanks and gratitude to the comrades of Spiritual Socialism SEVA.

आध्यात्मिक समाजवाद के द्वारा जनतांत्रिक विश्व सरकार की स्थापना कर सतयुग / सात्विक कर्म अर्थात् जैवविविधता को संरक्षित रखते हुए समयानुसार शिक्षा,

ज्ञान, नवाचार, रोजगार, विवाह, सामाजिक, आध्यात्मिक, आर्थिक दयित्व के निर्वहन के साथ राजषियों के द्वारा संचालित व ब्रह्मर्षियों के द्वारा नियंत्रित लोक सत्ता की आवश्यकता आ पड़ी है।

उपरोक्त उद्देश्य व लक्ष्य के प्राप्ति हेतु पुस्तक में विभिन्न सिद्धांतों की रचना/व्याख्या की गई है। आध्यात्म/धर्म, परमात्मा व आत्मा के कर्तव्यों का समन्वित दर्शन है। वही; भौतिकवाद/आत्मा का भौतिक शरीर; धर्म पूर्ण अर्थ अर्जन के साथ पवित्र वैवाहिक व सामाजिक रिश्तों का निर्वहन करते हुए लोककल्याणकारी होना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक के संपूर्णता के लिए मैं परम आदरणीय प्रोफेसर मुज़म्मिल प्रोफेसर अर्थशास्त्र व पूर्व कुलपति, पूज्यनीय बड़े भाई डॉ. एस. के. त्रिपाठी, पूर्व अतिरिक्त संचालक/प्राचार्य उच्च शिक्षा छत्तीसगढ़ शासन, मेरे सुपुत्र कप्तान डॉ. गिरीश पांडेय, सुपुत्री डॉ. पूजा पांडेय, विदुषी अर्धांगिनी श्रीमती नीलम पांडेय, मेरे समस्त पूर्वज सर्व स्व. गजाधर पांडेय, तुरंती शिवप्रसाद ठाकुरदीन, परशुराम व अन्य तथा पिता श्री वासुदेव पांडेय का आभारी हूँ।

इस मौलिक कृति के संपूर्णता में परम पिता परमात्मा व माँ भगवती की प्रेरणा निश्चय ही रही है। मैं आभारी हूँ कि उन्होंने मेरा इस दायित्व के लिए चयन किया।

एकैडमिक पब्लिकेशन दिल्ली का प्रकाशन संबंधी सहयोग के लिए आभार।

अंततः आध्यात्मिक समाजवाद SEVA के साथियों को धन्यवाद व आभार।

(प्रो. जय नारायण पांडेय)

15 अप्रैल 2022 ई. दिन–षुक्रवार

चौत्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी संवत 2079

Prof. Mohd Muzammil

EX Vice Chancellor,

Dr. B.R. Amdedkar University,

Agra(Formerly, Agra University Agra)

Vice Chancellor, MJP Rohilkhand University,

BareillyProf. of Economics, Lucknow University,

LucknowVisiting Fellow, SAVSP, QEH,

University of Oxford, UKLucknow, UP, INDIA

(prof.muzammil@gmail.com)

Foreword (First Edition)

SPIRITUAL SOCIALISM

Dr Jai Narain Pandey, Head of the Postgraduate Department of Economics, Rajiv Gandhi Government PG College, Ambikapur in Surguja District of Chhattisgarh State of India has prepared a very novel manuscript and it is about how economics can help the people in achieving well-being, good health, and happiness. He has recalled old knowledge with new economic thinking and the challenges of development in modern context. This is important in the sense that development should not be seen only in terms of the outcome of investment for personal gains but it should be viewed from the perspective of humanism, coexistence and general welfare of the people at the global level through better management of resources and the state itself through morally sound democratic means and ethically derived cooperative principles.

He has graded the human needs which have to be fulfilled in order of importance and intensity. In this context, we are reminded of W S Jevons as he classified goods on the basis of their nearness to consumption or we can distinguish between needs (of various orders) and desires of higher order! Dr. Pandey has underlined the sequential significance of what he says as Primary needs, Secondary needs, and Tertiary needs.

He has focused on the role of cooperation in achieving these requirements for living backed by human, moral and ethical values which provide the much needed underpinning to any campaign leave alone cooperation and cooperative efforts. It is more than one hundred years ago when first cooperative society's act was passed in India and the subsequent growth of its various dimensions and the observation of the all India Rural Credit Survey Committee Report (1951-53) that cooperation in India has failed but it must succeed.

The author has brought in focus that food clothing and shelter come in first preference as primary needs of the human individual in his strive for development and then is felt the needs of transport, education, medial, employment and social life (wedding etc.) which are classified as secondary needs;and finally communication, entertainment, tourism general knowledge and specific sciences are grouped in tertiary needs which are higher requirements for decent living.

The author has argued for achieving spiritual socialism there should be a provision of free education and employment on appropriate time along with free food and housing at the work place itself. He has also outlined a new pattern of election process and more power being given to Panchayat. He has also opined that there should be separate heads for management of forest resources, gram panchayat, the state itself and the country at large on the basis of provisions of holy scriptures that are based on time tested principles of plural society with strong underpinning of moral and ethical values. He has suggested that there is a need for having democracy in true senseof the word i.e. rule of the people and a world parliament for a democratic global government which should be a true representative of the people in order that spiritual socialism is established.

I congratulate and offer my best wishes to Dr Jai Narain Pandey, author of this manuscript.

Prof Mohd Muzammil

चन्द्रभूषण शर्मा
पूर्व अध्यक्ष
छत्तीसगढ़ शिक्षा आयोग एवं पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, नई दिल्ली
पूर्व प्रांताध्यक्ष
मध्यप्रदेश शिक्षक संघ भोपाल/छत्तीसगढ़ शिक्षक संघ रायपुर
निवास-गरुड़ भवन, कटोरा तालाब रायपुर, छत्तीसगढ़
दूरभाष-0771 2427459

रायपुर, दिनांक-15.12.2020

संदेश (प्रथम संस्करण)

प्रो. जय नारायण पाण्डेय ने धर्म व कर्म संसद के स्थापना के साथ, शिक्षानीति को रोजगार मूलक बनाकर योग्यतानुसार रोजगार तथा कर विहीन अर्थव्यवस्था हेतु सुझाव दिया है।

उन्होंने एक बैंक-एक खाता की बात भी की है, जिससे अर्थव्यवस्था में सामाजिक विसंगतियों को दूर किया जा सकेगा।

प्रो. जय नारायण पाण्डेय को मैं बधाई देता हूँ कि उन्होनें अपने अनुभव व अध्ययन को समावेश करते हुए, लोक कल्याण हेतु आध्यात्मिक समाजवाद पुस्तक के रूप में विकास की दिशा दृष्टि के लिए पथ प्रदर्शन का कार्य किया है। उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(चन्द्रभूषण शर्मा)

डॉ. राम विलास वेदान्ती
पूर्व संसद सदस्य लोकसभा
(प्रतापगढ़-उ.प्र. संसदीय क्षेत्र)
वशिष्ठ पीठाधीश्वर
वशिष्ठ भवन
हिन्दू धाम, श्री अयोध्या धाम
जिला-अयोध्या (उ.प्र.) भारत

श्री अयोध्या धाम, दिनांक-12.12.2020

शुभकामना संदेश (प्रथम संस्करण)

प्रो. जय नारायण पाण्डेय द्वारा 'आध्यात्मिक समाजवाद' पुस्तक लिखी गयी है। श्री पाण्डेय के द्वारा लोक कल्याण के लिये लिखी गयी उक्त मूल कृति के प्रकाशन होने से निश्चित ही समाज को लाभ मिलेगा।

उनके द्वारा लिखे गये पुस्तक के लिये हमारी शुभकामना सदैव प्रो. पाण्डेय के साथ है।

(डॉ. राम विलास वेदान्ती)

Dr. Jai Narain Pandey
Head, Post Graduate
Department of Economics & Chairman BOS Economics
R.G. GOVT. P.G. College Ambikapur Surguja, (C.G.), 497001, India
Email Id-profjainara.pandey@gmail.com
Whatsapp No. 9993710643

Ambikapur, Dated 24th Oct 2020

From Writer's Desk (First Edition)

Lack of international institutions or hold of some influential nation on them, radical nationalism, militarism, colonialism, industrialization, nationalist role of newspapers & Television, terrorism, lack of diplomacy, economic recession has been the cause of diseases and crores of deaths and wars. In the world, the result of the diseases and economic troubles caused by colonialism , the formation of the 'League of Nations' after the first world war and the result of the economic recession & the second world war 'United Nation Organization' and all the trouble prevailing in the world today are 'Spiritual Socialism' in the same.

Democracy, it should not be run on the basis of privatization and dictatorship, but on the basis of suggestion of Gram Panchayat. In democracy, monopolistic forces should also not be allowed to flourish. In the present situation the need is to adopt the coordinated Spiritual Socialist democratic Governance system of parliament of Karma & Dharma, for the welfare of the world in coordination with spirituality and society.

Keeping the above facts in mind, I have written a book called "Spiritual Socialism". The present book Spiritual Socialism is present in summary form. The detailed book will be published by 2022.

I am especially grateful to Dr. Mohd. Muzammil (Professor of Economics & Ex Vice Chancellor), who has justified the book's justification by writing the Preface. With all I am also grateful to Dr.

S.K. Tripathi, Principal/Additional Director, Higher Education Surguja Division, whose support has always been available to us.

I am especially grateful to the Honorable Mr. Chandra Bhushan Ji Sharma (farmer Chairman, Chhattisgarh Education Commission), who guided me from three decades. The blessings of my gurudev Dr. Ram Vilas Vedanti (Shri Ayodhya Dham), my venerable father Shri Vasu Dev Pandey and the Mother Late Smt. Vidyavati Pandey in the form of subtle self- power have always with me.

In the entirely of the book presented, sacrifice of my Ardhangini honorable Smt. Neelam Pandey, my son Dr. Captain Grish Pandey & my daughter Dr. Pooja Pandey are my inspiration. This book is respectfull

dedicated to the supreme father, the supreme sole of the Universe. Also,"for the welfare of the world dedicated to the people of world."Thank to all.

अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का अभाव या उन पर कुछ प्रभावशाली राष्ट्रों की पकड़, उग्र राष्ट्रवाद, सैन्यवाद, उपनिवेशवाद, औद्योगिकरण, समाचार पत्रों/दूरदर्शन की राष्ट्रवादी भूमिका, आतंकवाद, कूटनीति का अभाव, आर्थिक मंदी ही तीन शताब्दियों से बीमारियों व युद्ध का कारण रही है। विश्व में, उपनिवेशवाद के कारण उत्पन्न बिमारियों व आर्थिक परेशानियाँ का परिणाम प्रथम विश्व युद्ध के बाद 'लीग ऑफ नेशन्स' का गठन तथा आर्थिक मंदी य द्वितीय विश्व युद्ध का परिणाम संयुक्त राष्ट्र संघ' एवं वर्तमान में व्याप्त तमाम परेशानियों का परिणाम आध्यात्मिक समाजवाद ही है।

प्रजातंत्र, निजीकरण व तानाशाही के आधार पर नहीं चलना चाहिए बल्कि ग्राम पंचायतों के सुझाव के आधार पर चलना चाहिए। प्रजातंत्र में एकाधिकारी ताकतों को भी पनपने नहीं देना चाहिए। वर्तमान परिस्थिति में, आवश्यकता है कि आध्यात्म व समाज के समन्वय से विश्व कल्याण के लिये कर्म व धर्म संसद के समन्वित आध्यात्मिक समाजवादी, जनतांत्रिक समाजवादी शासन पद्धति को अपनाया जाए।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, मैंने आध्यात्मिक समाजवाद नामक पुस्तक लिखा है। वर्तमान पुस्तक में आध्यात्मिक समाजवाद सारांश रुप में प्रस्तुत है, विस्तृत पुस्तक 2022 तक प्रकाशित की जायगी।

मैं डॉ मो. मुजम्मिल (प्रोफेसर अर्थशास्त्रा व पूर्व कुलपति) महोदय का विशेष रुप से आभारी हूं जिन्होंने प्रस्तावना लिख कर पुस्तक के औचित्य को प्रमाणित किया है। साथ ही, डॉ. एस. के. त्रिपाठी, प्राचार्य/अपर संचालक उच्च शिक्षा सरगुजा संभाग का भी आभारी हैं, जिनका सहयोग हमें हमेशा मिलता रहा है।

विशेष रुप से मैं आभारी हूँ माननीय श्री चन्द्र भूषण शर्मा (पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ़ शिक्षा आयोग) का, जिनका तीन दशकों से मुझे मार्गदर्शन मिलता रहा हैं। मेरे गुरुदेव डॉ. राम विलास वेदान्ती (श्री अयोध्या धाम), मेरे पूज्यनीय पिता श्री वासुदेव पाण्डेय व माता प्रातः स्मरणीय स्व. श्रीमती विद्यावती पाण्डेय का सूक्ष्म आत्मशाक्ति के रुप में

आर्शिवाद सदैव मेरे साथ रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक के सपूर्णता में, मेरी अद्धागिनी माननीय श्रीमती नीलम पाण्डेय, मेरे पुत्र डॉ. कॅप्टन गिरीश पाण्डेय एवं मेरी पुत्री डॉ. पूजा पाण्डेय का त्याग, मेरा प्रेरणा स्त्रोत रहा है। यह पुस्तक ब्रह्माण्ड के संचालक परमपिता परमात्मा को सादर समर्पित है। साथ ही विश्व के कल्याणार्थ जन–जन को सादर समर्पित है।

(Prof. Jai Narain Pandey)

Dr. Jai Narain Pandey
Head, Post Graduate
Department of Economics & Chairman BOS Economics
R.G. GOVT. P.G. College Ambikapur Surguja, (C.G.), 497001, India
And chairman of BOS Economics
Sant Gahira Guru Vishwavidyalaya, Sarguja, Ambikapur (C.G.)
Ambikapur, Dated 15th Jan 2024

From Writer's Desk

वर्तमान वैश्विक वातावरण सर्वप्रदूषणयुक्त हो चुका है। अधकचरे ज्ञान प्राप्त करके डिग्रियों से प्राप्त अहंकारय अंग्रेजो द्वारा दी गई शिक्षा प्रणाली आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक वातावरण के साथ प्राकृतिक वातावरण को समाप्त कर रही है। संपूर्ण प्रदूषण को समाप्त करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ करना होगा। प्रस्तुत पुस्तक में विकास के विभिन्न सिद्धांतों के बाद सबसे ज्यादा बल शैक्षणिक व्यवस्था को सुधार हेतु लगाया गया है।

अध्याय 6 में सतयुग विश्वविद्यालय स्थापित करके ग्राम तथा कुटीर उद्योग में प्रशिक्षण की व्यवस्था के तहत विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा के साथ रोजगार की व्यवस्था की गई है। विकास के द्वितीय चरण में सतयुग ग्राम स्थापित करके 100% रोजगार व संस्कार प्रदत्त करने की व्यवस्था की गई है। क्रमशः तृतीय व चतुर्थ चरण में राष्ट्र व विश्व के सामाजिक व राजनैतिक वातावरण को चरितवान लोगों के हाथ में सौपने के लिए कर्म व धर्म संसद की व्यवस्था की गई है। अंततः विश्व सरकार की स्थापना के साथ "समाजवादी तंत्र योजना उत्पेरक गणतंत्र" के स्थापना हेतु सतयुग की वापसी पर बल दिया गया है।

अध्याय 2 में जहाँ सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था के लिए सुधिता प्रदान करने हेतु सिद्वांतों की संरचना की गई है। वही अध्याय 3, 4 व 5 में कार्यपालिका, न्यापालिका,

व्यस्थापिका को सुदृढ़ता करने हेतु आवश्यक समालोचना की गई है।

"आध्यात्मिक समाजवाद", "आध्यात्मिक समाजवाद व विश्व सरकार" तथा वर्तमान पुस्तक "आध्यात्मिक समाजवाद व सतयुग की वापसी" के संरचना में पिछले 45 वर्षो का भारत व विश्व के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा आध्यात्मिक व्यक्तियों व संस्थाओं से प्राप्त अनुभवों को लोक कल्याण हेतु परिस्कृत करके आवश्यक परिवर्तन के लिए प्रारुप तैयार कर व्यवहारिक दिशा प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

आशा है विश्व के वर्तमान सामाजिक व आध्यात्मिक महापुरुषों को भविष्य के विश्व को संरक्षित करने के लिए यह पुस्तक मार्गदर्शक बन पाएगी। इसी आशा के साथ समस्त सहयोगियों व श्रेष्ठजनो को सादर धन्यवाद।

(Prof. Jai Narain Pandey)